अध्याय-10

उपसर्ग, प्रत्यय (कृदन्त, तद्धित)

भाषा प्रयोग में कुछ ऐसे मूल शब्द होते हैं जिनका अर्थ की दृष्टि से और विभाजन नहीं किया जा सकता। इस प्रकार के मूल शब्द भाषा की अविभाज्य इकाई होते हैं। ये किसी शब्द से पहले जुड़कर नए अर्थ का निर्माण करते हैं, चूंकि ये एक स्वतन्त्र शब्द के रूप में प्रयुक्त नहीं होते इसलिए इन्हें 'शब्दांश' कहा जाता है।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि उपसर्ग वह शब्दांश होते हैं जो शब्द के पहले जुड़कर शब्द का अर्थ बदल देते हैं।

उपसर्ग शब्द उप + सर्ग इन दो शब्दों के मेल से बना है जिसमें सर्ग मूल शब्द है जिसका अर्थ है जोड़ना या निर्माण करना।

जैसे–उप + हार = उपहार

उपसर्ग के भेद

हिन्दी भाषा में मुख्यत: तीन प्रकार के उपसर्ग प्रचलित हैं–

उपसर्ग

- संस्कृत के उपसर्ग
- हिन्दी के उपसर्ग
- उर्दू/विदेशी भाषा के उपसर्ग

(1) संस्कृत के उपसर्ग–संस्कृत में कुल बाईस उपसर्ग होते हैं। ये सभी उपसर्ग तत्सम शब्दों के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे–अति, अधि, अनु, अप आदि

क्र.सं.	उपसर्ग	अर्थ	शब्द
1.	अति	ऊपर/अधिक/परे	अतिप्रिय, अतिरिक्त, अत्यधिक, अतीन्द्रिय, अतिसार
2.	अधि	अन्तर्गत/प्रधान	अधिकार, अधिशेष, अधिकरण, अधिष्ठाता
3.	अनु	सादृश्य/पीछे	अनुकरण, अनुसंधान, अनुयायी, अनुग्रह, अनुज
4.	अप	निरादर/दीनता	अपमान, अपयश, अपव्यय, अपकीर्ति
5.	अपि	निश्चय/भी	अपितु, अपिधान, अपिहित (ढका हुआ)

6.	अभि	पास/सामने	अभिमान, अभिवादन, अभिषेक, अभिमुख, अभियान
7.	अव	अनादर/हीनता	अवगुण, अवहेलना, अवनति, अवसाद, अवगाहन
8.	आ	पूर्ण/विपरीत/सीमा	आदेश, आहार, आगमन, आजना, आगमन, आभार
9.	उत्/उद्	उच्चता/ऊपर/श्रेष्ठ	उदार, उत्सर्ग, उत्साह, उद्वार, उत्थान, उत्तम
10.	उप	समीपता/सहायता/गौण	उपहार, उपवास, उपदेश
11.	दुर्/दुस्	निन्दा/कठिनाइ/बुरा	दुर्गुण, दुराचार, दुस्साहस, दुर्जन, दुष्कर्म, दुश्चरित्र
12.	नि	निषेध/अधिकता	निवारण, निषेध, निलय
13.	निर्/निस्	निषेध/रहित/बिना	निर्बल, निरपराध, निर्भय, निश्चल, निष्काम, निस्तेज
14.	प्र	अधिक/आगे/ऊपर	प्रहार, प्रबल, प्रयोग
15.	प्रति	समानता/प्रत्येक	प्रतिवर्ष/प्रतिवाद/प्रतिध्वनि
16.	परा	विपरीत/उल्टा/पीछे	पराजय, पराधीन, पराकाष्ठा
17.	परि	चारों ओर	परिवर्तन, परिक्रमा, पर्यावरण
18.	सम्	पूर्णता/सुन्दर	संयोग, सम्मान, संसार
19.	सु	शुभ/अच्छा/सहज	सुयोग, सुलभ, सुगम
20.	वि	विशेष/अभाव	विदेश, विहीन, विभाग
21.	स्व	अपना/निजी	स्वतंत्र, स्वदेश, स्वार्थ

संस्कृत व्याकरण ग्रंथों में उद् उपसर्ग है जबकि हिन्दी में उत् का भी प्रयोग होता है।

(2) हिन्दी के उपसर्ग–हिन्दी भाषा में संस्कृत के उपसर्गों में परिवर्तन करके (तद्‌भव) उपसर्गों का निर्माण किया गया है।

क्र.सं.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अ	नहीं	अकाज, अचेत, अटल
2.	उ	ऊँचा	उछालना, उतारना, उजड़ना
3.	औ	बुरा/नीचे	औगुण, औघट, औसर
4.	अन	बिना	अनपढ़, अनदेखा, अनमोल
5.	अध	आधा	अधमरा, अधखिला, अधपका
6.	अध:	नीचे	अधोपतन, अधोमुख, अधोगत
7.	उन	एक कम	उनसठ, उनचास, उन्नासी
8.	क/कु	बुरा/कठिन	कपूत, कुढंग, कुचाल
9.	नि	विपरीत	निडर, निशान, निपट
10.	स/सु	अच्छा	सपूत, सजल, सजीव, सुयश, सुकान्त
11.	भर	भरा हुआ/पूरा	भरपूर, भरसक, भरमार

12.	चौ	चार	चौमासा, चौराहा, चौखट
13.	ति	तीन	तिरंगा, तिपाही, तिमाही
14.	दु	दो	दुनाली, दुरंगा, दुमुँहा
15.	पर	दूसरा	परहित, परसुख, परकाज
16.	बिन	निषेध/अभाव	बिनदेखा, बिनखाया, बिनब्याहा
17.	चिर्	सदैव	चिरकाल, चिरजीवी, चिरपरिचित
19.	परा	विपरीत/पीछे	पराभव, पराक्रम, पराकाष्ठा
20.	बहु	ज्यादा/अधिक	बहुमूल्य, बहुमत, बहुवचन
22.	सह	साथ	सहचर, सहगामी, सहयोग
23.	सम्	पूर्णता/साथ	समाचार, समागम, समापन
24.	स्व	अपना	स्वदेश, स्वराज, स्वभाव

(3) उर्दू (विदेशी) उपसर्ग–भारत में बहुत समय तक उर्दू व अन्य विदेशी भाषाएँ प्रचलित रही हैं अत: हिन्दी भाषा में ऊर्दू, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के उपसर्ग भी प्रयुक्त होने लगे हैं।

क्र.सं.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अल	निश्चित	अलविदा, अलबेला, अलमस्त
2.	ना	रहित	नालायक, नापसन्द, नापाक
3.	ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनइनायत, ऐनमौका
4.	ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लापता
5.	बद	रहित/बुरा	बदनाम, बदजात, बदतमीज
6.	बा	अनुसार/साथ	बाकायदा, बाअदब, बाइज्जत
7.	गैर	रहित/भिन्न	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क
8.	खुश	अच्छा	खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशखबरी
9.	कम	थोड़ा	कमजोर, कमसिन, कमअक्ल
10.	हम	साथ	हमदम, हमसफर, हमराह
11.	बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशक, बिलाकसूर
12.	बे	अभाव	बेचारा, बेहद, बेचैन
13.	दर	में	दरअसल, दरकार, दरवेश
14.	हर	प्रत्येक	हरघड़ी, हरवर्ष, हररोज
15.	ब	साथ/पर	बदस्तूर, बतौर, बशर्त
16.	सर	मुख्य/प्रधान	सरकार, सरदार, सरताज

17.	नेक	भला	नेकदिल, नेकनीयत, नेकनाम
18.	हैड	प्रमुख	हैडमास्टर, हैडबॉय, हैड गर्ल
19.	सब	उप	सब इन्स्पेक्टर, सबडिवीजन, सबकमेटी
20.	हाफ	आधा	हाफपेन्ट, हाफटिकट, हाफ शर्ट
21.	जनरल	प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सैकैट्री

उपसर्ग और प्रत्यय में समानता

उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दों के अंश होते हैं, पूर्ण शब्द नहीं। इनका अकेले प्रयोग नहीं किया जाता। दोनों के प्रयोग से ही अर्थ में अन्तर आता है। एक शब्द में इन दोनों को साथ भी जोड़ा जा सकता है।

जैसे–

उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय	नया शब्द
अभि	मान	ई	अभिमानी
अ	ज्ञान	ई	अज्ञानी
स्व	तंत्र	ता	स्वतन्त्रता

प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं और नए अर्थ का बोध कराते हैं उसे प्रत्यय कहते हैं। भाषा में प्रत्यय का महत्व इसलिए भी है क्योंकि उसके प्रयोग से मूल शब्द के अनेक अर्थों को प्राप्त किया जा सकता है। यौगिक शब्द बनाने में प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है।

जैसे– खिल + आड़ी = खिलाड़ी

मिल + आवट = मिलावट

पढ़ + आकू = पढ़ाकू

झूल + आ = झूला

हिन्दी में प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं–

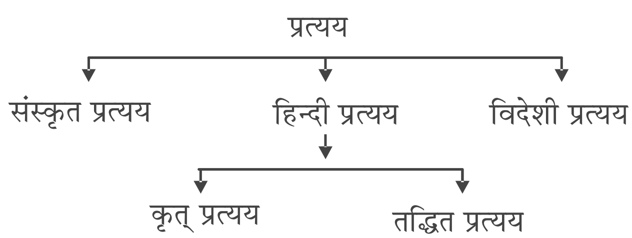

(1) संस्कृत प्रत्यय–

1.	इत	–	हर्षित, गर्वित, लज्जित, पल्लवित
2.	इक	–	मानसिक, धार्मिक, मार्मिक, पारिश्रमिक

3.	ईय	–	भारतीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय
4.	एय	–	आग्नेय, पाथेय, राधेय, कौंतेय
5.	तम	–	अधिकतम, महानतम, वरिष्ठतम, श्रेष्ठतम
6.	वान	–	धनवान, बलवान, गुणवान, दयावान
7.	मान	–	श्रीमान्, शोभायमान, शक्तिमान, बुद्धिमान
8.	त्व	–	गुरुत्व, लघुत्व, बंधुत्व, नेतृत्व
9.	शाली	–	वैभवशाली, गौरवशाली, प्रभावशाली, शक्तिशाली
10.	तर	–	श्रेष्ठतर, उच्चतर, निम्नतर, लघुत्तर

(2) हिन्दी प्रत्यय–(1) कृत प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय–वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्ययों से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना होती है।

संज्ञा की रचना करने वाले कृत प्रत्यय–

1.	न	–	बेलन, बंधन, नंदन, चंदन
2.	ई	–	बोली, सोची, सुनी, हँसी
3.	आ	–	झूला, भूला, खेला, मेला
4.	अन	–	मोहन, रटन, पठन
5.	आहट	–	चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट

विशेषण की रचना करने वाले कृत प्रत्यय–

1.	आलु	–	दयालु, कृपालु, श्रद्धालु
2.	आड़ी	–	खिलाड़ी, अगाड़ी, अनाड़ी, पिछाड़ी
3.	एरा	–	लुटेरा, ममेरा, बसेरा, चचेरा
4.	आऊ	–	बिकाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ
5.	ऊ	–	डाकू, चाकू, चालू, खाऊ

कृत् प्रत्यय के भेद–

1. कृत वाचक
2. कर्म वाचक
3. करण वाचक
4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

(1) कृत वाचक–कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कृत वाचक प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	हार	–	पालनहार, चाखनहार, राखनहार
	वाला	–	रखवाला, लिखने वाला, घरवाला

क	–	रक्षक, भक्षक, पोषक, शोषक
अक	–	लेखक, गायक, पाठक, नायक
ता	–	दाता, माता, गाता, नाता

(2) कर्म वाचक कृत प्रत्यय–कर्म का बोध कराने वाले कृत प्रत्यय कर्म वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

1. औना – खिलौना
2. नी – ओढ़नी, मथनी, छलनी
3. ना – पढ़ना, लिखना, रटना

(3) करण वाचक कृत् प्रत्यय–साधन का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय करण वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

1. अन – पालन, सोहन, झाड़न
2. नी – चटनी, कतरनी, सूँघनी
3. ऊ – झाड़ू, चालू
4. ई – खाँसी, धाँसी, फाँसी

(4) भाव वाचक कृत प्रत्यय–क्रिया के भाव का बोध कराने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

1. आप – मिलाप, विलाप
2. आवट – सजावट, मिलावट, लिखावट
3. आव – बनाव, खिंचाव, तनाव
4. आई – लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई

(5) क्रियावाचक कृत प्रत्यय–क्रिया शब्दों का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय क्रिया वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

1. या – आया, बोया, खाया
2. कर – गाकर, देखकर, सुनकर
3. आ – सूखा, भूखा, भूला
4. ता – खाता, पीता, लिखता

तद्धित प्रत्यय

क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	मानव + ता	= मानवता
	जादू + गर	= जादूगर
	बाल + पन	= बालपन

लिख + आई = लिखाई

तद्धित प्रत्यय के भेद–

1. कर्त्तृवाचक तद्धित प्रत्यय
2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय
3. सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय
4. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय
5. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय
6. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय
7. स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय

(1) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–कर्ता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय कर्त्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहलते हैं।

जैसे–	आर	–	सुनार, लुहार, कुम्हार
	गर	–	बाजीगर, जादूगर
	ई	–	माली, तेली
	वाला	–	गाड़ीवाला, टोपीवाला, इमलीवाला

(2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय–भाव का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	आहट	–	कडवाहट
	ता	–	सुन्दरता, मानवता, दुर्बलता
	आपा	–	मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा
	ई	–	गर्मी, सर्दी, गरीबी

(3) सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय–सम्बन्ध का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	इक	–	शारीरिक, सामाजिक, मानसिक
	आलु	–	कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु
	ईला	–	रंगीला, चमकीला, भड़कीला
	तर	–	कठिनतर, समानतर, उच्चतर

(4) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय–गुण का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	वान	–	गुणवान, धनवान, बलवान
	ईय	–	भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय
	आ	–	सूखा, रूखा, भूखा

ई – क्रोधी, रोगी, भोगी

(5) स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय–स्थान का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	वाला	–	शहरवाला, गाँववाला, कस्बेवाला
	इया	–	उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया
	ई	–	रूसी, चीनी, राजस्थानी

(6) ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय–लघुता का बोध कारने वाले तद्धित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	इया	–	लुटिया
	ई	–	प्याली, नाली, बाली
	ड़ी	–	चमड़ी, पकड़ी
	ओला	–	खटोला, संपोला, मंझोला

(7) स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय–स्त्रीलिंग का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	आइन	–	पंडिताइन, ठकुराइन
	इन	–	मालिन, कुम्हारिन, जोगिन
	नी	–	मोरनी, शेरनी, नन्दनी
	आनी	–	सेठानी, पटरानी, जेठानी

उर्दू के प्रत्यय

उर्दू भाषा का हिन्दी के साथ लम्बे समय तक प्रचलन में रहने के कारण हिन्दी भाषा में उर्दू भाषा के प्रत्यय भी प्रयोग में आने लगे हैं।

जैसे–	गी	–	ताजगी, बानगी, सादगी
	गर	–	कारीगर, बाजीगर, सौदागर
	ची	–	नकलची, तोपची, अफ़ीमची
	दार	–	हवलदार, जमींदार, किरायेदार
	खोर	–	आदमख़ोर, चुगलख़ोर, रिश्वतख़ोर
	गार	–	खिदमतगार, मददगार, गुनहगार
	नामा	–	बाबरनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा
	बाज	–	धोखे़बाज, नशेबाज, चालबाज
	मन्द	–	जरूरतमन्द, अहसानमन्द, अकलमन्द
	बाद	–	सिकन्दराबाद, औरंगाबाद, मौजमाबाद

इन्दा	–	बाशिन्दा, शर्मिन्दा, परिन्दा
इश	–	साजिश, ख्वाहिश, फरमाइश
गाह	–	ख्वाबगाह, ईदगाह, दरगाह
गीर	–	आलमगीर, जहाँगीर, राहगीर
आना	–	नजराना, दोस्ताना, सालाना
इयत	–	इंसानियत, खैरियत, आदमियत
ईन	–	शौकीन, रंगीन, नमकीन
कार	–	सलाहकार, लेखाकार, जानकार
दान	–	खानदान, पीकदान, कूड़ादान
बन्द	–	कमरबंद, नजरबंद, दस्तबंद

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. निम्न में किसमें 'अ' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है?

(अ) अनुज (ब) अनुगामी

(स) अटल (द) अनपढ़ [ ]

प्र. 2. किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है–

(अ) औगुण (ब) लाचार

(स) कपूत (द) लड़ाकू [ ]

प्र. 3. 'चौमासा' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है–

(अ) दुर् (ब) चौ

(स) चिर् (द) चार [ ]

प्र. 4. संस्कृत में कितने उपसर्ग होते हैं?

(अ) तीस (ब) उन्नीस

(स) उन्नीस (द) बाईस [ ]

प्र. 5. 'शेरनी' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय हैं–

(अ) नी (ब) अनी

(स) कनी (द) रनी [ ]

प्र. 6. 'चचेरा' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है–

(अ) आ (ब) चेरा

(स) एरा (द) ईरा [ ]

प्र. 7. 'देवरानी' में मूल शब्द है–

(अ) आनी (ख) देवर

(स) देव (द) ई [ ]

प्र. 8. हिन्दी में प्रत्यय के भेद हैं–

(अ) एक (ख) दो

(स) चार (द) आठ [ ]

प्र. 9. निम्नलिखित उपसर्ग लगाकर प्रत्येक के दो-दो शब्द बनाओ?

(1) अनु	(2) पर
(3) कु	(4) आ
(5) अभि	(6) बा
(7) नि	(8) अन्

प्र.10. नीचे लिखे शब्दों में से उपसर्ग अलग करके लिखो–

(1) अनुरूप	(2) अपमान	(3) अनुराग
(4) दुराचार	(5) अनजान	(6) अवमानना
(7) आमरण	(8) बेहद	(9) निरोग

प्र.11. उपसर्ग की परिभाषा व उदाहरण लिखिये।

प्र.12. उपसर्ग कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक को उदाहरण सहित समझाइये।

प्र.13. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) इत	________	________
(ख) ईय	________	________
(ग) त्व	________	________
(घ) आड़ी	________	________
(ङ) हार	________	________

प्र.14. निम्नलिखित में 'मूल शब्द' और प्रत्यय बताइए–

(क) मिलावट	________	________
(ख) उठान	________	________
(ग) सुन्दरता	________	________
(घ) लेखक	________	________
(ङ) श्रेष्ठतर	________	________

प्र.15. निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए–

(क) समाज (ख) लोक

(ग) देव (घ) नीति

(ङ) पुराण

प्र.16. प्रत्यय किसे कहते हैं? समझाइये।

प्र.17. प्रत्यय के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्र.18. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय को उदाहरण सहित लिखिए।